

पत्र ११

योगिनीविजयस्तव

३०/६

आर्य समाज
ASHA ARCHIVES

3098

शान्तिनिधिः

ॐ नमः ४ व्यासदाहो लवा ॥ शुक्ररुद्रपुत्रकामिमहाहो लवनिर्जित ॥ राघिनीदेव
न, होलव नमः ॥ शुक्ररुद्रपुत्रकामिमहाहो लवनिर्जित ॥ राघिनीदेव
पददिवा, देवास्तु नमः ॥ सिद्धिदेव स्वदेव, समयमलयदेव ॥
निनाहया नन्द, तीर्थेश्वरमन्दकेनरी, वामदक्षिणसामान, पवित्रलक्षणः
ह, नमिरीसिद्धिदेव ॥ शुक्ररुद्रपुत्रकामिमहाहो लवनिर्जित ॥ राघिनीदेव

सिं समरी ॥ ग त्रु कि ग गा छ म लु , सा ध का नां हि गाय वै य र म ह ल खालि ध्य श य
 प्रिनु कि छ य या छ य । या छि नी ठ ध वी या धी , त्रु पी ७ न वा सि नी म् ॥ ॥
 न ग रू त्वा वि धि स्ताने , स न ४ क व लि ना न थ ॥ प र व कु वि रा व न य या य व वि
 रा ठ ध ४ ॥ छ म नि दं सर्व स त्वा ना द् ४ र वा धि वि ना स नं ५ म द्वा वि द्वा य छ म नै सु
 दा वि ड य व द् ध ॥ य या छ कि वि नि का नी , ना द वि द्वा व ल नि नै पि ष ल्ना द प दं

द्विबो ४ सर्वभानिक प्रसाद ॥ छंद ^सरुटिकर्मकाशी स्वरचन्द्रक यो हलै ॥ यच्छ वः
 केनटा धाये गिनै गै विमाननै ॥ छंद भक मधुख (छन्द) मधुरी वदु यपिने ॥ क ४
 पालमालि गै हीमै छल्लख हौ न धायी ली ॥ महावत धयी हिम मिषड कक २
 लिने ॥ महाछाकि छु धा धाये वय दाने क ग ल य ॥ वतु रुरुं विह्वल्लारी ना छ ४
 यकापवी गिरी ॥ महापुगसमा चरुं कालक छल्लम छिरी ॥ हेल वै रै यव काये:

भानिमा छु कया गुम कया ली ली कला गी ^{रुं} सर्व देवनमस्करी ॥ छंद सरुटिकर्म
 काशी गुषा प्रवित्र (छन्द) कलै ॥ उगुठायी वनाप गा मधनिमा क (छन्द) दयी ४ ॥
 सर्वावयव सपर्क जठाम कटम छिगा नगु यय निपवायी छिगा पत्रासन छिरी ॥
 गुराच गहसाव वय दाने क ग ल य ॥ गिराव सुवृता नंदी यल्लमा रय धायिगा
 यजार्ण गार सै रगा नासा ये वमना नानी ददा गुम कि मे छर्य सुणी गार वतु मम

हिमक (७) न्द्रसकां ^{रु} सर्वावयविषितामक कंठान्ति तवाद्यौ, हायक यय र वि
 गी॥ कपा लखदी गधया, ककुला राय (७) हा ला न नन यणी छु विव कु, सगु व क
 महाव लान॥ हा वा स न य ता नि ली, वा य सी व य व न्दि ता, पिय मि का रि मा ३ २
 छेखा, नायाय हाय वि ति नी॥ ॥ कां सी कणा ल सा हा चौ, नो प य य यः
 (७) रि ती, य क य क रु वा न्द वी, उ द ता रि वि ना छि नी॥ क या रु म म हा हा

नि, कंक जा या स मं मि ता, ^{वि} हा निं ठा हा सि कां दि वी, पर्व मा (७) व व सि ता ४॥
 न वा क स म स कां ही, सि न्द्र या य द वि षु हा, य रु म खौ य रु वी द्र, क (७) कं य ल ४
 रु वि ती॥ स र्वा य ध ध या हा मा, न टा म क ट म छि ता, व ज्र वे दू र्य य चि ता, स हा म
 सि च ले क ता॥ क कु ला रा य (७) प ता, स न्द्रा र्द क र (७) य या, क पा ल मा ल मा ला
 रि, मा दि ती वि क ता न नी॥ क ला जी का ल ह ली च, वि द्या दे द स म रु वी य ताः

सुनय तानिही दत्तु या या समनिता ॥ क्षान्तिके या तु ममाता आ य मा या ८
 सम्य दै १ दत्तु ता नहि ता न्दवी सर्व द व न म क ता ॥ सु त फ के न क पु र्वा का सा
 प्रा द क स नि ता ॥ दि र्व सौ म क क क्षा र्वा पी न्ना न ग य या ध या ॥ उ त्ता र उ द दि व
 नी उ ल क्कु ल रु षि ता ॥ उ तु र्व द न क्षा रा यी म क्का र उ न ले क ता ॥ म ष ता उ
 व का य ता ॥ य र्व य र्व क्षा रि ता ॥ का यी रि १ क र्क के १ उ र्व य रि र्व उ र्व ले कः
 ८

ता ॥ विष्णु ल र्व द्वा र्दी ध या सि र्द स य १ य प त्रि ता ॥ उ त्ता र द न सी उ र्व उ र्व दाने
 क र्क स या ॥ उ र्व क्री उ र्व नि द्या यी उ रि षा क्षा र्वा न ॥ ता म र्क का स मा य मा
 आ य या या ८ य स म्प दा ॥ क्षा न्तिके या तु म दे वी वा उ र्व क्षा दि र्व व रि ता ॥ म हाः
 म दि र्वा क्षा ढा या ॥ म् उ मा ले उ ले क ता ॥ क पा ल मा ल या य ती म हा य ता क १
 गा स ना ॥ वा उ र्व मा र्वा दे वी वा उ र्व मा र्वा उ रि ता ॥ उ र्व र्वा मा र्वा यी

डा छलखटाह धात्रिधी, वह कथा लहसाउ, वयदा ते कत लया। प्रकाशि
वा कला मीमा, मसु (धमहि गनि मया॥ विवंग न्या विमा र्जन से, या नि नी वः
नद वन्दिती, महा बु धाम हा सा हा, महा व ल स म मि ता॥ निव र्कि ह द या हू गा
डरु पा दि ष्व व स्मि ता॥ धा नि के या रु म नि ती, सर्व सिद्धि प दा यि की॥ न मी ता
सिद्धि सर्व लु, महा रौ ल व प्र ता दी ॥ ७ ता दे वा स द ह्या लु, व स वि षू न्द प जि ता

वाप का निर्म ला धा ना ॥ सर्व सिद्धि प दा यि का ॥ १ त ल ना ल स मा प्र टा, अ न ना
प यि से स्मि ता ॥ १ सा लु क्सा द धि म (ध, महा प द्य व व स्मि ता ॥ वि व प्र नी स दा का
ल, मे प्र व द्य व दा दि ता ॥ या नि न्या या ग से रू गा, या धा मा र्जन व व स्मि ता ॥ १॥
सु धि रू गा व ल मि न्दा, सु ति रु षी क या म्प दे ॥ का ष की व न्द का ना रा, ७ क व
कु म हा लु टा ॥ न प्र के का ल मा ला रि, म हा रु नि वि रू षि ता ॥ वि षू ला य १ ४

हस्तारु, तर्कयनी वा वस्त्रिता, उष्णकपायविकटा, महावृषरावादिनि॥ ३ः
 उकोटिनगा जोडी, कपायुसमसंनिकाम, विजयाहमवर्धु, हाटका रात्र
 (स) ठेला॥ वज्रहस्तमहाकाया, नानाचलविरहसिता, काशीकपाल (स) ३
 हाया, महादिव्यवर्णमिनी॥ दवासूत्रनगानिही, हात्रकधुमसिद्धिगा॥ ॥
 ददागुसमहासिद्धि, महाविरावसेचयत्रांकधुविष्णुलाक्षी, तथितनका४

लासनिगा॥ ठाकिहस्तपुचधुगु, वज्रवेद्युमसिद्धिगा, कृष्णयानसमायुद्धा
 अग्निवाकसमद्रवा, उकवकुसुवरीमा, आयुवायाव्यसमदा॥ कपायुः
 विजयमस्य, सिद्धिषध्वपजिता, महामर्यामहातजा, उष्णकटरायावहा४
 जिह्वालेलिस्मानागु, पिर्णीलापिठारु, उना, उठिपनीमहाउह, कपालः
 रात्र (स) ठेला॥ उषानीलाऊनसुया, उधुददासिद्धिवाविधी, महामहिषः

आदि विष्णु

मा प्रदा आर्यवर्द्धिके लोभम ॥ न प्रपुगसमा प्रदा रुरुद्धक धात्री दी गती
लमचप्रता रोमा ॥ अकाखामा दसनिता ॥ र गमा किनिसे की र्द्ध ठावा वता प्र
सैयगा ॥ ददागुमसदा काले दिवसिर्द्धिमनिपिता ॥ चक वेवा न्यादिठ ॥
ता सुप्रल नकम छिता ॥ ४ छ कचि र्द्धि निष्पामा ॥ पासहसामहा वला ॥ ॥
वेइर्य क्छ लोपाता ॥ हा प्रकय प्रम छिता ॥ मक प्रम नमा प्रदा ॥ अष्टावाः

सर्वविता ॥ कछाता प्रविचिगुं द ॥ आदिता तालका हाता ॥ निता मयो वता नरुक्
प्रागुममहानिके ॥ सिद्धिददागुमनिती ॥ रय ४ ४ पां गुमौ सदा ॥ महाया प्राम्ता ॥
छामा ॥ धूमके गुमसप्रता ॥ अत्रा क्छा क प्रतामा ॥ प्रकव क्छा रुरु गुता ॥ देता क्छा
ही दापता ॥ हा प्रक छ लम छिता ॥ ॥ म नम सनक ता टापा ॥ सिता पर्य क्छ ॥
ता स्रजा ॥ नामा प्रल विचिगुता ॥ पुनिस स्रज ॥ अत्रा ॥ स्रसिद्धि प्रता नी ती ॥

ਸਾਹਿਬਿਅੰਦ

वायुला कनिवाहिनी । उठा दणा यनकयी । काया रुममज्जहिके । छरमा या ध्यमे
वर्ण्य । रक्ता नीरकि मा वृता । हिमवच्चिरा रासा । विस्फुरन्ति समनराः ॥
कणालमा लाराधम् । महारु निसमावृता । उठा कपालच्छा रा वा । हलखटार्थी
धात्रिणि । सिंहवर्मभुकापता । सख्या नोपयानिता । महाघातविश्रांती । मा
लिताया निषप्रिया । पतस्कधसमाजूटा । वीरघावी लवन्दिता । काया रु

तमहाधमनि, कमसिद्धिचक्षासरी ॥ ए लयावर्द्धसैकाधम, हि न्नाज्जनसमः
 एता ॥ इष्टाकलाप्रविकता, एता नामा रात्रिधा कला ॥ पिठाला क्रापिठान्
 दाञ्जुलिमालाविह्विता ॥ तामयूषामहाकाया, पिठालाद्यगथादिना ॥ वि
 प्रवेतालनामिता, सिद्धिवाचकवन्दिता ॥ महाकालाविष्णुलाक्षी, कलागुमः
 मधमनिर्वै ॥ यातिनिचकमेतन्तु, नानायाताञ्जुजान्तिता ॥ सवितीतादाताधर्व

सर्वसिद्धिदायक॥ कलागुप्तमहाभक्ति सायुजायाव्यसमादौ अधनामागः
 यावन्दे वापके सर्वनामखा कलाका नगान्द्रिया सुतितासेकयामा है ॥ ४
 प्रकलुन्दर्वहृता नानामलिविरुषिता ॥ गुप्तगुप्तवधमायुता नागयन्त्रा ॥ ४
 वीतिनि ॥ ३ टा इतकताप्रीति ॥ ३ इत्युक्तार्द्धधविधी ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४
 प्रिन्नगुक्तो धमयता ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४

प्रपञ्चता ॥ ३ इत्युक्तार्द्धधविधी ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४
 कारुण्यलामयता ॥ ३ इत्युक्तार्द्धधविधी ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४
 कुदा ॥ ३ इत्युक्तार्द्धधविधी ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४
 प्रकलुन्दर्वहृता नानामलिविरुषिता ॥ गुप्तगुप्तवधमायुता नागयन्त्रा ॥ ४
 वीतिनि ॥ ३ टा इतकताप्रीति ॥ ३ इत्युक्तार्द्धधविधी ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४
 प्रिन्नगुक्तो धमयता ॥ ३ मलामलिकता टापा ॥ ४

ॐ नमो ॥ नीलाय ललाटे ॥ जटा ॥ शरव ॥ शरिता ॥ गम ॥ कामलि विवि
 गाणी ॥ वैष्णवी विष्णुसम्पत्ता ॥ सिद्धिदा धर्मनमिता ॥ कञ्ज उममममम ॥ कर्णः
 का ॥ लो ॥ इवा देवी ॥ गज ॥ धादि ॥ राव ॥ चसा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 हावला ॥ का ॥ अजीवि ॥ गह ॥ न्नी ॥ च ॥ मयू ॥ च ॥ व ॥ च ॥ वा ॥ दि ॥ दी ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 हत ॥ का ॥ रा ॥ च ॥ ॐ नमो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

जीव ॥ च ॥ दा ॥ दे ॥ वी ॥ न ॥ ल ॥ ल ॥ री ॥ क ॥ य ॥ ग ॥ म ॥ १ ॥ का ॥ ला ॥ छि ॥ न ॥ ध ॥ म ॥ च ॥ च ॥ रा ॥ उ ॥ ल ॥ या ॥ म ॥ द ॥ नि
 स ॥ या ॥ च ॥ ल ॥ य ॥ द ॥ वि ॥ वि ॥ ग ॥ णी ॥ स ॥ ध ॥ या ॥ स ॥ व ॥ य ॥ न ॥ ना ॥ ॥ म ॥ दि ॥ ध ॥ म ॥ न ॥ मा ॥ च ॥ रा ॥ ॥ ६ ॥
 ल ॥ ट ॥ रा ॥ या ॥ न ॥ ना ॥ ॥ पि ॥ ण ॥ म ॥ त्री ॥ पि ॥ ण ॥ क ॥ णी ॥ च ॥ दा ॥ न ॥ व ॥ ल ॥ रा ॥ य ॥ क ॥ यी ॥ ॥ सी ॥ व ॥ रू ॥ क ॥ व ॥ णः
 रू ॥ नी ॥ सि ॥ द्ध ॥ नी ॥ ध ॥ य ॥ वि ॥ ष ॥ ॥ नि ॥ ले ॥ न्दी ॥ व ॥ य ॥ मा ॥ ला ॥ च ॥ री ॥ मा ॥ लि ॥ ता ॥ य ॥ च ॥ म ॥ ६ ॥
 यी ॥ ॥ वा ॥ य ॥ हा ॥ ध ॥ य ॥ सी ॥ रा ॥ सि ॥ दि ॥ ध ॥ य ॥ ध ॥ स ॥ वि ॥ ता ॥ च ॥ ला ॥ य ॥ का ॥ च ॥ दा ॥ फ ॥ णी ॥ ४ ॥

रुक्मा नीपत्रिणविका । वाचा ही काम देहका । नाना सिद्धि ददायु म सुख
 दिशु ललाता सा । वाच नाह म सन्निता ॥ सुख समधिक गाथा । नाना लीला ॥ ३४
 मीयता ॥ नगाना नुम देस दी । रूषिगा क न कथता ॥ वाञ्छु या समा प्रद ॥ ११
 वज्र हस्ता म हा व ला ॥ वरुणी विरह नीच । जटाम कट सारिता ॥ हा प्र कथ ॥ ३४
 रूषाणी । सुखा सुख नमस्तुता । वाञ्छा हा सुख दानि ह । माय प्र वाञ्छा वर्धनी ॥ ॥

विगग वस्तु रूपाणी । उन्दीळ् नु समद्रवा । कया गु म म हा धानि । कर्म सिद्धिः
 कसा ष्ठाणि ॥ प्रद को ध म मद्रगा । कफ म मरु सन्निता । कया ल द ना धा यानि
 मा क्री विरु गा नना ॥ डि का ल लिख मा नागु । दष्ट कया ल हा म वा । वद्र म ४
 लो धि या हा या । म हा पि सि ग रा ज नी । दि वा म गा य तानि ह । म हा रु क्षि मः
 मा व गा । ४७ शक के का ल प्रणतु । अस्ति र म्मा व विता ॥ कया ल मा ला रा व धा । म ४

शक्तिविग्रह

हा वृक्ष लसति गमय कटाप्रियच्छात्र, छल्लखद्वार्थी धालीली ॥ डल्लकीः
धुजनी देवी, राजवर्मा वरुणिता ॥ बाधुवर्मा वरादेवी, द्रुगुक्रालपिठी ॥
ला ॥ जठारि ॥ समिजाजनी, देवासुवयर्क्यी ॥ रतवर्गा लयक्रुद्ध ॥ पञ्जिताप
यमध्वया, सामुद्रा च धुपूपाठ ॥ रोजवार्थी समुद्रवा ॥ ददागुपयमेध्वर्या ॥ छि
वावावतयर्क्यी ॥ जगयर्क्यमहाचर्क ॥ सर्वचक्रपञ्जिता ॥ विन्दुवा दालिका ॥

१२

यागु, रथाना दा लमकका ॥ धकिठ कानिठ कुरु, नठाना क्रामु या ॥ सताः
निजाचक्रकणालीच, खणमार्जनपुत्राधका ॥ जगवानाचवदय वडापी ॥ ० स
पा ० मर्दका ॥ चक्रवर्तिध्वया छिन्ना, नानावस्तु नयासिता ॥ कर्चलुः
ममहाछानि, रकिवेमनिमूर्कमी ॥ चछाचछुमरुगीचव, चछुवणमनाकः
वा ॥ चछाक्राचछुनिधावा, कुकटीचछुनायिका, चछुसनायकायता, मछु ॥

का हा प्रिका यता ददनु सम उच्यते लोकसिं वधुमा गता ॥ उन्दी कृतसि ४
नीयामा नैव नीवा रधी गथा ॥ वायवी अथ को वंशो लूना नीम प्रपत्ति ४ ॥ ७
ना वेदि व्व जाना ४ सायध वा गुणा दया ॥ लोकपाल उच्यते यका लोकालोक १२
निवासिनी १ कर्चकु म म हा छा नि लोकसिं न लोकमा गता ४ वा हा ती वा क ४
था वानी रो म विगु जथा हुची १ वंदमा गा हि प्रे ध्या च या नि न्या या ग रा या ४

नाना रजन सै यका ४ रव रुं ट क पा द य ४ या हा उच्यते दं द सै यका हा च ४
क्षान्तिका १ उरु कर्चकु म नि ही वा क वे वि र वा सि का ४ म ना रु वा म ना धा ४
म न सा सु म ना यि का ४ म ना हा नि म ना द्वा दी म न ४ णा ति क जी ग था ॥ म न नी च
ति या नि न्ना ४ प उ य पा म ना सि का ४ म ना स न न उ च्यते सै यका हान ग रा या ॥
डा रु म उ स मा धा म ददनु वल दा यि का न् ॥ हि प्रे ध्या च सु व र्ध्वा च का क नी ह

तका सुथा ॥ प्रणिनीयसूदाय ॥ अमनायिनीयाय ॥ याणिनीयायायायायाः
 हातकेंहामधिष्ठिता ॥ यत्र हसामुपलब्धा ॥ मकारुलविरचिता ॥ ददातु
 ममसोहाय्यं ॥ लोकसिंलोकमागच्छ ॥ लम्बायलम्बिनी ॥ छुष्य ॥ प्रतिप्रकाशदान
 ना ॥ अजकक्षीमहानासा ॥ विद्युर्जिह्वागथायसि ॥ अगाविरुहानसमन्ता ॥ याहि ॥
 न्यायिनीनालिका ॥ ४५ ॥ प्रतिमानलटानि ॥ रजतैर्दूर्यामलित ॥ ४६ ॥ कथादिप्र

सैयका ॥ कूर्वन्तुममहानिकै ॥ वज्रिणीहाकिर्कैमाय ॥ दहिनीरुक्मिनीगथा ॥
 वाणिनीध्वजिनिर्वैव ॥ गदिनीहलिनीगथा ॥ यत्र नीयकुक्षीर्वैव ॥ ममसादहा
 मरुय ॥ ॥ यत्रयनिजगत्सर्व ॥ मडाहेलवसैयगा ॥ ४७ ॥ कूर्वन्तुममहाहा
 कि ॥ लोकसिंलोकमागच्छ ॥ स्रष्टवर्द्धयवर्द्धय ॥ चक्षुमक्षुकाणालिनि ॥ मरुः
 हनुविष्णुकाशी ॥ गथावैवयपदिनी ॥ सर्वामुयायिका ॥ ४८ ॥ का ॥ गिहलोचः

शक्तिविज्ञान

गणक्षय॥ वज्रदायूडयूपासु महासहितिविहृषिता॥ महाकनकलभराया
महाविरवविरुपा॥ दिष्टुदेसुसमापता॥ कूर्चकुमसमक्षान्तिकैदिष्टः
गयामहासाहा महाकालीलिबेहाया॥ नानाविरुहानसमानानानाचूषस
मन्त्रिता॥ दिवानकचिद्रोमाद्यपातालतलवासिनी॥ काशीविवि
हालानपकिहृतावठसिता॥ सततीणिमनसाक्रमैकूर्चकुमसदा॥ स

七

परादेवतासाय विष्णुलायावादिनी॥ हंसवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्ध
 दिनीगथा॥ वानवाकासुकीवेव मन्धर्नीछानिछितासिंहनादीग
 थावादी द्रविणीकन्यासुथ॥ ममाक्षीयीवेव दक्षसुवन्धसुवन्ध
 वादिनी॥ छान्यायवादीवेव यानिनायावादीसुवन्ध॥ छान्यायवादी
 दक्षसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्धसुवन्ध

हि मा॥ सर्वसूयामनसा ज्ञानि कर्षुमममदा॥ काटि वरुण यरु गै, पीः
 ० सै दा हन कृष्ण॥ सुहृदिक वंसाय, जलण कात्ररु चिरी॥ धजमाला कल
 दिवा, जलगा जलमहिरी॥ वदपा दपसी कीर्ण, मरुह कक्षा वा कल ॥ गृह का
 कक्षि याच व ४॥ यत्रिरी दिठद लो लुटे॥ मन्दि या द ड दा विष्ट, जल हिः
 न द वा दृते॥ ॥ समरु हें ज वा धरी, हं हें ज व म हिरी ४॥ या छि न्य

धन था वा सो, महा दय छु वा मिता॥ कणालिनी कण, या चि॥ कण ज
 कृग लो ख या॥ कणालमा लिनी चाना, कणाल ही त था य या ४॥ कण ४
 लणालिका ली ती, कणाल क ग मी लि का ४॥ जगो दे वा म हा रा ठ म, छः
 छु वा कि समरु ल, द द क मी दि ग नि र्ण॥ र क नी र कि व स य ४॥ ॥
 न न्दी छी का वा यी वें व, कृष्ण कर्षु समा क्ली॥ या रू साम म हा छ म ते॥ वः

विंगलु रयावदे ॥ चन्द्रकाटिक जा रास ॥ मीजाने रुवना नही ॥ कयातुः
 मम हाजमति ॥ मनोनामा विष्णु सावता ॥ पूर्वदिक्क सि गैरु ॥ यथा ठाना
 मविष्णु गै ॥ दमया काउउरि गै ॥ नानापुत्र विरुषि गै ॥ छाया नक कमः १०
 हाथाने मलिगदिक्क गावरी ॥ हालयाग कवध्मदी रोष धइयति कम
 ॥ चैव कायाववदू ली ॥ मिले उषा दसै कली ॥ ककी लगाउ धविष्णु ॥ मसि

गार्हक लुछये ॥ नन्दक वापन न्दा च ॥ लामगा समती राथा ॥ चत्वार्य ४
 नायका येता ॥ छल विद्युत्त मयुता ॥ पवनी पावनि यूडा ॥ यवति वीउ ४
 नायिका ॥ पार्वती हाकि हीयका ॥ पी० सैदा हयडिगा ॥ रंगपुत ठा धानः
 न्दे हा हा रु कायनादि गै ॥ कयातु विजये म चै ॥ मछया हाकि मूठ ली
 ४ ॥ अल्लनर्या मयूदी कुरै ॥ कयउ विगपा कू ली ॥ सफगा लसु विमुक्षी ॥ म

(ध) वैष्णव गुरुपित्री ॥ चक्षुः टर्की चना वाची ॥ क्षिवा रुक्ता चनादिनी ॥ क्षावाक्षा
 सनमाचरुं, क्षालाजि कासुतीषही ॥ वद्वि वकुसुलि लम्बे, धूम लोचनो
 उवै ॥ अग्नि ठा रू समरुती ॥ याक्षी सायविवायिनी ॥ अग्नि का लामदा गंक्षा, धूम १०
 वरुि रुलिनी वाना ॥ उगं महावला सीमा ४ को धिनी वद्वि सन्निहा ॥ अग्नि का
 निरुता का ला ॥ दहनी पवनी क्षिवा ॥ चक्षुः क्षिन्ना महा राव्य ॥ महा रुदय

दहनी ४ ॥ ॥ मधुमा ला धवा ॥ डा ४ ॥ कपाल कुरुदक्षि का ४ ॥ मद्य ४
 मासपियानि रू, महा चधि प्रलेपटा ॥ उरि ४ समावृत्त नंदव ॥ माक्रमा र्छन एका
 धा र्क ४ ॥ महा देव सुप्रक्षम नै ॥ याक्षी पञ्च उदा प्रक ॥ रुद्र काटि समायुक् ॥ क्षि
 वारु चाल सखि ती ॥ मन्दा किनी समायुक्, महा हानमलना सने ॥ यत्नमा ४
 ला कला रासै, विद्यवप्रि गंजसा ॥ क्षा कि पञ्च लमधु ॥ अग्नि पात्रवै ४

सिरी॥ वज्रपी (अप) विरुक्क सगगान नद प्पिरी॥ जिदिव कक्क ट जा वा ची॥ रु ग वः
 गाल वन्दिरी॥ ॥ सगगममहा वमनि क यो रु पु पु सै यरी॥ प म ठा का र वा
 या लु ग अ सा वि क ता लु टा॥ द त्रि (ध) को य ठि यो लु वे हा ग वि द ता॥ पि ञा च १२
 उ न सी की र्क य व ता ठ द र क ले ॥ महा ल श्री स मा य ता॥ या ठि ना रि ल यी क ता ४
 च छु च छु क ला लो ता॥ महा डि का र यो न ना॥ वी का ली द लु या पा रु॥ मा लि रीः

हे प वा ल के॥ पि र्की ले या रु क र्क र्क॥ द ति के रु क्क टी म र्खी॥ न रि नि ञा च य य
 का॥ या रु सि रि स मा व ता॥ ता स नी हा व दी मा या लु इ ग वि व सै व ता॥ अः
 ञि न का रु रु पा ल न॥ य त्रि री इ य रि कु मी च छु हे य व वे म् वा य डि री म दिः
 वा लु टे॥ ॥ व्द न्द नी ल म य रु मे ४ य का य य प्प ञा रि री॥ पि र व न स ४
 मा य न र्क व (धे) य प्प ञा रि री॥ रु स म पा य नै प रि मा न न्द ञा ग सा लु टः

क्या गुणममहात्मनि ॥ सदा काले विवक्षया मज्जदा समादायै ॥ नैम ह्ये
 सैव वसि गा ॥ कदाचन सखायु महा गेयवमहिनी ॥ स्वर्गीय गेयवापरीः
 योनिनीति ॥ समावृत्त ॥ सोम्या सोम्या सुखी ह्यमना सुखमना विद्वन्मयिका २०
 विद्वन्मयी यस्मात्क्या गा ॥ या क्रमावृत्तयसुथ ॥ महा धनिमहादायु महा ॥
 पादिसुधाकि क ॥ ॥ महावलनसैयक ॥ रुग्ण लनसविन ॥ अना

वृक्षसैयक ॥ सर्व देवनमस्कृती ॥ पी० सैदाहसैयक ॥ क्या गुणममहात्मनि क ॥
 बालपुत्रे माहायात्रे ॥ ह्यमनायक ह्यमिता ॥ योनिनीति यवे गा ले ॥ स्वर्गी
 यानु ह्यमिता ॥ अतिरिक्त फल देय ॥ तथा वेव दवा मखे ॥ विद्युक्ति देम
 हायात्रे ॥ यतमा ले वि ह्यमिता ॥ ॥ या क्रमे विविधा काये ॥ स्वर्गीयः
 टक धाविनि ॥ कृष्ण उर नति रं मु लो ॥ यलमा ला समा क ले ॥ ह्यमिता गा चावे

सैर्ये ॥ वरिरीयाउ धानके ॥ वृद्धनीलमहानीले ॥ दमपाकाउमहिती ॥
 कोमायाजाकिसेविषे ॥ काधरेउवपत्रिरी ॥ कयाउममहाधमनि ॥ पी०से
 दाहवन्दिरी ॥ अयन्यासमहाकुरुं ॥ अष्टविटपाकले ॥ नानापरापः २१
 देसीकीर्ण ॥ पतसीयातरीषदी ॥ धवलाकुनयावे ॥ उमादीउमसैर्ये
 वेदमनुपत्रिचुदा ॥ देसपथसमापूरा ॥ ददाउममधमनि के ॥ लाजावः

रुतिहान्दवा ॥ जीरुवकठाठाधवा ॥ वजवेर्यदीफाङ्गी ॥ दमकलुलमहि
 वापूजासनमापूरा ॥ वनमालाविरुषिगा ॥ पीतवसुचुदासोम ॥ मरुला ४
 रायदीकला ॥ नीलायलकगाटा ॥ अटा ॥ लोखप ॥ लोमहिता ॥ मकरमः
 विविचिरीषदी ॥ धवलाकुनयावे ॥ रुषिरीरीयतासके ॥ त्रिउकाटियरा
 काई ॥ धुमवर्णिसमाकले ॥ डसकलालविकटी ॥ पीवनीप्रधियासर्वे ॥ ४

शुद्धिपत्र

कणलनविचिरोन मधुमालाविरुचिनी॥ ॥महाकालेसुखाधालो जा
क्रमेष्टपत्रिवात्रिनी॥केलासीनाछिडीधर॥लोककईककयालिनी॥याजिनी
याठासपन्न४सर्वावयविरुचिनी॥लोककईककईव विजालिपूतनागथ २२
ठाऊकईरुडकाली॥पलमालाविरुचिनी॥कूलपूतापूकेधाये नदसेधा
नवचिनी॥मकजासनमापूटी वेवसतेपूधिरुचिनी॥डसरुहोपवापतेपहियेः

मम वा वस्ति नै॥ एतद्युगताक्षवा ई॥ कजातुममज्जति वै॥ क्रमसायायमै ४
सोमी॥ महाविरावसे वरी॥ ॥ कदम्बनपूष्पाद्यै विगुज्जमरकाविरूषिती॥
कैकध्वजसमाका ई॥ वायवासी वा वस्ति नै॥ एतद्युगताक्षवा ई॥ विगुगिरी
४ पुनल्लनिकिरी ४॥ गगुलीमाननीयायै कपालिनी महाछत्र॥ ज्जमज्जमपीथ
मध्यास्तेयागिनी निरी ४ पुनवस्ति नै॥ एतद्युगताक्षवा ई॥ वायवासी वा वस्ति नै॥

ਸਾਹਿਬਨਾਮ

[illegible]

लमहिरी॥ नानाविहारी कीर्त॥ रगतं गाली करी॥ न कण दयव (छा) ॥
 रं लवमा ररि रं ॥ पुगा रर ॥ कणालक यराय रं ॥ यका सः
 वयम रं ॥ अकमाला विलमि रं ॥ या छिनी विविध कार्ये वरि रं इर
 गिक रं ॥ स्या नाद व की रं ॥ चक व रं म व रं ॥ राम की का रं नी न्ना म ॥
 या रं सा रं य रं ॥ दल यो लो ह रं ॥ ड रं क रं म रं म रं ॥ का उ रं

काङ्क्षितम्

[illegible][illegible]

शक्तिविग्रह

रवीसुमन्दी गथा॥ बालाचकेकयावेव कालयागीतयेवच। सुदयालोष्ठ ४
जीवेव॥ धयाचकुवोवस्मिता॥ अधिकाप्रवर्धनि॥ सुस्मितातुवगतयलोष्ठ ४
हानिकवर्धनुमनिहो गथापापपत्रिकयी॥ बालाहिवा गथा इहम् वामनी २१
कर्षदा गथा॥ चर्चातुसुयतायेव॥ यतावधायप्रणिनी॥ आपवकुतुकीः
उक्ति॥ यतायीसीववस्मिता॥ अधिकाप्रवसाधिसु॥ हेववचुयचदि

ता॥ हानिकवर्धनुमनिहो॥ गथाविजयवर्धनी। हन्तावलीसुतायाच॥ ह ४
वाकासासलाचता॥ महानन्दासुनन्दाच॥ काटयाक्रीवकानना॥ यलोष्ठ ४
तिविहमयाक्री॥ सुनन्दीचयकीर्तिता॥ उताह्ययाठायकावे दाययसी ४
ववस्मिता॥ गजह्यकुतुकीउक्ति अधिकाप्रवधान्ना॥ महाहानिकवः
वर्धनि॥ रकानीरुकिवत्सला॥ यतायसुतिहमनाता रानूमत्याचछीव

ला॥ ह्याव ह्याविधीवैव, ह्याविधीका म्बकी गथा॥ म्बकावलिगथा चान्या॥
लोतमीकोलि की गथा॥ ह्योका द्यावविरका गथा॥ कलो वैववावलिगथा॥
वायववैवका उक्ति॥ कूर्चलुवाधिकायके॥ यावायकायकूर्चनि॥ ह्यानि २३
अममनि ह्यसै॥ ह्यानि का द्याविधी (ह्याध्या॥ वायावैवनखी गथा॥ ह्यालि ४
नीसूमखीवैव॥ पिठैलावसूकहिनी॥ मागैमनी कलजा गथा॥ कलो सध्या

वावलिगथा॥ नगाटवा ४ कलावके॥ कीउक्तिमदिगालना सर्वा ४ स्या ४
गमनसा॥ कूर्चनिमम ह्यानि का॥ ह्याना ह्यावा वाज ह्याना॥ ह्याया सामु
क्रियात्मिका ४॥ सर्वा सामम कूर्चलु॥ महीं लीमहीं लपिया॥ वामना हर्षधवे
वा॥ सिंदव कामदावला मदा का लेकवी लच्छ, रौव ह्य ह्य पुवहुक ४॥ अ ४
दिवर्णलि गथा ४॥ याहिनी वादीया लका ४॥ ह्यानि कला तुमनि हो॥ राका

नामकि वसला ॥ वगुगुजाठादी धात्रा ॥ ठाज व कुमहा लकट ॥ उगाठादी वः
 ले ॥ ४ सा दनाय कामावर्तपात्रका ॥ धाकनी समगान न्दा ॥ साय प्रह्वपिगा
 मह ॥ पल्लवाममनिद्या ॥ धिदिव कुमहा धज ॥ कालकट ह्वविख ॥ २१
 वा ॥ गुं नाया वीत्रनायका ॥ उममहा वलाधाया ॥ सर्वतगानया लका ॥
 लका कर्वकुमनिरी ॥ धानि क र द न न ॥ मद्य व धू व ह क री ॥ ॥

उकदसाठा धाधिय ॥ विश्रयात्र सुग ॥ याठानिठाम धाठा ॥ विनाः
 यका धिपा लाठी ॥ उगल्लवसमन ॥ कर्वकुममहा धानि ॥ निरुका लेधि
 वदुया ॥ वलिद न्दा दठाठी वी ॥ हयठा वा हय रुथा ॥ सुठा वा ठाममिरी मा ॥
 धिखद्युखद्युल रुथा ॥ धाकु ह्व धाधिय ल्लेव ॥ दाय प्रदाठा धायका ॥ ॥
 उगवायामहा वीया ॥ महवलय या कमा ॥ आय या या धामे ह्वया ॥ न्द दकुम

मम च दाम् ॥ आमा दह्युमा दह्यु ॥ समरवा इमा खसु थाम् ॥ अविद्या विद्या के कर्त्तव्य
 वृत्त गेठा सनाय का ॥ ४ ॥ धामनि के कुमनि ले ॥ सदा विद्या विना धाने ॥ तान्त्र न ४
 नमा दे नृ ४ सजा न ४ सुन्द य सु थाम् ॥ महाव कुत्र मा ही मा ॥ दादा का रस का रस ॥
 कुरु धज अविद्या जा ४ ॥ कल्याण ध्यु गु जानना ॥ अत कलियुत्तरा खा ना ४ से ना
 नयति पा ल का ॥ या नि नी ना पिया नि ले ॥ सर्व सिद्धि पदा यिका ॥ क्रमा या ध्यः

पुण्य च कु ॥ सर्व काले हि गे पि दा ॥ लमा ट च छ कर्त्तव्य ॥ सुल द नी ठा ज न ने ॥ ४
 वृहत् कर्म सजा न न्द ॥ सफ मंगु वला कट ॥ अत विनाय का नि ले ॥ कुता न न्द स ४
 मति गा ॥ निरुद्धा य कुम विज्ञान ॥ हृष्ट गुष्ट न वेत सा ॥ श्रीरु ल कर्म ल य ध
 चक्षु ला चत क सु थाम् ॥ मात र्त्ती वा के का ती ३ ॥ अमा धा ४ सफ म ४ मग ४ ॥ मला
 प क म य च कु ॥ नि ले या नि नी पिया ॥ हय वा धू लि से रू गु ॥ पिछा च कु सु

नाचाने। मातर्हमनीक लज्जाता॥ कर्चलुममहमनि के॥ अर्धमध्याह्नसंस्तु
 नानाचकंसमन्तिता॥ यस्मिन्नावावामदवागु॥ यातिन्यावीजनायका॥ दिवाः
 दहान्तं सर्व॥ दिवास्तुनसमन्तिता॥ दिवालीकाजसमन्तादिवाहृष्टिमहा॥ २९
 वल॥ दिवामाहर्नष्टकीर्ति॥ नापदसुरसंस्तिता॥ काउक्तिवकुविना
 सेन्निष्ठदानुष्टदंता॥ ॥ चरंवाचयवीजा॥ स्वच्छन्दयावताः

रुजा॥ तसर्वेदिवासेष्टया॥ अहमनिस्तुमतिमरुमे॥ समन्तिह्येष्टयस्तुः
 दष्टुष्टुनवतसा॥ पदमकिमतानालु॥ दवगानीष्टयकृष्टयकृ॥ नामा॥
 निकारुष्टिष्टामि॥ रुक्मिण्यकनवतसा॥ कलुगायामयुद॥ मारुनन्दा॥
 ववस्तिता॥ समुद्रकृष्टिमासु॥ संस्तिता॥ कपिलस्तुथ॥ वृहदवास्तुमे
 वाष्टु॥ मृदिगानिष्ठतसदा॥ महाकालिष्टगय॥ यष्टिष्टाहिमवतिष्टो॥ ॥

अम्बिकाया उकार्यायी ॥ ले कार्या कालिका स्मृता ॥ कलिं त्वावत धात्रिधम ॥
 कोष्ठा लमा सरस्विका ॥ रुणा कं कलिं ता देवा ॥ नासा वै च कनायिका ॥ काटि व
 र्धिका र द्वा ॥ काष्ठा य द्वा चिनी म ता ॥ नाम ली ली गु दामा दी क द्वा टी व प्र ॥ २०
 य ॥ पिङ्गला काम प्र य गु ॥ ची न वै प र का स्मृता ॥ नपा ल मूल का ली गु ॥
 न चा य मूल नायिका ॥ सिं ह न गा स नी पा क ॥ अ य न्ना लु वि ला सि नि ॥ क ल सा :

उरु उ क वे ॥ उ रू य न्ना लु या कृ सा ॥ रु णि म रू व गु व द्वा या ॥ वर्म च र्णी क या :
 क टा ॥ चै पायी ष क या पा क ॥ पि षा ॥ ची म षा ॥ धा य ॥ क प्र कं गु न र्थ नि :
 का ॥ ले कार्या य उ नी स्मृता ॥ वा द्वा उ वि ट द द ॥ हा गु ॥ मा य व द्वा ध द्वा वि ॥
 का ॥ ध्या मा य ट क वे व ॥ ह स नि का म वि द्वा ता ॥ सिं हा मा या म रू व पा क ॥ १
 य स नी पा य स क ल ॥ कि या ट मा ह नी नाम ता था वै द द्वा धा य ॥ धा व स

आदिपत्र

मूलक जादवा ॥ काशिकासूत्र ॥ आट बाचेत द ॥ वसुतम
लक नका ॥ अवमादि प्रसंखा गा ॥ यातिना ४ पथिवा तय ४ ॥ मदिता ४
कानसमीना ॥ दिवो ह्यस्य समन्विता ४ ॥ किदन्ति विविधा कार्ये ॥ विह्वने ४ २१
पवला ठाले ४ ॥ अनिवापि तावीर्या ॥ हे प्रवक्ष्यामि यदि ता ४ ॥ ॥ पद
मकि प्रता सर्व ॥ सुकुन्दे ४ पविवापि ता ४ ॥ शान्ति क वक्तु मनि हो ॥ सिद्धि

अपद मरुमे ॥ ददनु सर्व ता वन ॥ विविध नामा जासा ॥ अथानिहसिता ४
वाना ॥ तिर्यग्विहसिता सुथा ॥ उद्धनिहसिता देवा ॥ माना रंद विह ४
दिता ४ ॥ गप ४ सव र ह सुच ॥ या वा सुच न का सुथा ॥ का ता वान न्द हे ४
र ता ॥ मति छु ता विनिहसिता ४ ॥ दिवादि वाना मादि वा ॥ मन ४ पर्या
य क वला ४ ॥ यातिनी ठा वी जासी ॥ मय ग ल वा वसिता ४ ॥ सुफ धा मा सि

का धरु ॥ खरु जी हुरु जी तथा ॥ सर्व कल्याण नीया दी ॥ नीया दी हकि वत्स
 ला ॥ पुय च लु म मा नी ॥ सपि गा यत्रि ता ॥ ४ स दा ॥ अन न न ॥ ४ ॥ दृष्टि च
 ४ ॥ का य म हा द नी ॥ क ला च विज या च ॥ वि य र्कि दा क च कि दी ॥ य म २२
 डि दा तथा धा नी ॥ च का नी पु य ना न का ॥ ॥ म घ ना दा वि षा ला नी ॥
 वा य व न्ना च धा ॥ ४ ॥ न ता दे वा ॥ ४ ॥ क ला च क च दा म ता प वि षु ता ॥ दा च

॥ का नी पु व र्हा ॥ प द्म मा ला वि ह पि ता ॥ ४ ॥ म कि का रा च दा प ता ॥ ना द पी
 ॥ ० ॥ व र्हा ॥ का ल म र्मा ज ला नी ॥ ह ला म विज ये स दा ॥ पु य च लु प य
 ला के ॥ ४ ॥ न नि वि र्हा न च ता ॥ को लि नी विज या ॥ ४ ॥ ४ ॥ धा नी धा न इ
 र्हा ॥ ४ ॥ इ र्मा च च ला दि वा ॥ ड च षा क ल त्रि दि ॥ उ टि ला का ल व र्हा
 वा म नी व र्हा म र्मा ॥ ४ ॥ व र्हा का र्हा ता मा ॥ स म ना द व का रा था ॥ ड का म ॥ ४ ॥

याज्ञिकपितृपुत्र

स्वीयव (ध) गुण॥ का लया गी कया लिनी॥ यमा न की का या ली वा॥ यत्नमा ल्हा
पजात्रि गा॥ मारु दु मधु ल सुभु॥ काला न ल स म प रा॥ सु ज लि ल दामा॥
ला हि र्मा लि गा॥ स म गा क ला॥ विरु ति वि य या म धै॥ ह म य त क या नि गा॥
पु य च लु म हा रा ठी॥ वी र्य च म ति म र्म मी॥ वा ला का ला नि का ना लु॥
पति रं दे व दा म्प है॥ सिद्धि का र्य नि मि र्मा र्थ॥ सा ध का नै दि गा य वे॥ ॥

२२

मा र न न्दा सु न न्दा च॥ प र ता म र्म म धि गा॥ वि जाली हा क नी वे वा॥ स फ मा धु च
च व ति॥ आ र्थ का उ म् का वे वा॥ य व ती पि लि पि चू का॥ ल न्द ण हा ध्व पि र्वा॥
गा॥ का टि रं दे व व सि गा॥ मा र रं द म् वे स फ॥ ती ठी नी नी च रु स थ॥ से हा
पि का रि रं द म्॥ उ रु वि हा ति धा कि नी॥ उ म् पि रं द रि न म्॥ या ठी ना ध्व॥
च उ व रु॥ क र्म मा पि का वि रं द म्॥ ल वि रु न वि रु चि गा॥ उ च्च मा क र्म द ल

ਅਤਿਅੰਤ

का॥ दामि त्वाहिमहावला॥ देवगुहा देहा गुवि जूषे ह गण दासुथा॥ इः
द्वया इति पिश्रुतु दोह्यो वस्त्रा क्रमे॥ या क्रसा पक्ष वेह्या पिच्छा यवेः
वषा उष्मा॥ नाभगुहा गुयपक्ष॥ षष्ठिको मावसे रता॥ गुहाय ती चक्षा का २४
जा नका वेपथना गुहा॥ यश्च कानी मद्रस्तु॥ कालका नीहा तगुयी॥ डकुषा का
उविख्याता॥ हात दय महावला॥ सफ गिं हाति वेलगा॥ धलि सफ छी जा सुः

था ॥ ह्यगुयलुधावात्री ॥ वामिनी का नास नतु ॥ ॥ दंतु द्वा दहा मा ४ ॥
 स्वाता ॥ अपसा जातु या दहा ॥ वामिनी रजवाखाता ॥ यदुका धविनिमता ४ ॥
 वसन्ति रतयगु ॥ नास नसमनता ४ ॥ वनापवनसीवाये ॥ कृष्ण देव कृष्ण
 था ॥ कृष्ण न द्या सुट सु नव ॥ ता यत वामिनी यषरा माह सु न श्रुता या ॥ मकः
 वरुष्म वामन के ॥ वामिनी वरुष्म का याम ॥ वामिनी का ना यषरा ॥ वामिनी पर्वता ४

लुच॥ नवमं वमनं कथं॥ यत्र सानि महद् यत्॥ वल्लिका मामदा दया॥ चानि
 कर्त्तुमसर्वं कानो॥ इति वस्तुला॥ कर्म ज्ञायां ज्ञायु॥ दिवादिवा न॥
 प्रथम॥ हृणामलानलिं कुरु॥ यासां चानि यरानि ता॥ चन्द्रादिवा वृत्त २१
 अक्षरं त्वाणामनमं वरा॥ नाम गृहामद्रुतां चन्द्रकादीदिवा दनता॥ दि॥
 नाधिपादिना यां॥ ध्रुवनं कुरु दनता॥ सर्वस्यो गमनसा॥ चकचिर्लवः

रिता॥ गृहणीता वा या हं॥ इका नाम न कथया॥ यस्मिन् विविधा क
 या॥ साधने रं वदिने॥ सत्त्वैर्यमदा नैः॥ याये (७) (७)॥ इति या धनेः
 ॥ ॥ हानविहानमने च यो (७) नाना वि (७) रुथा॥ दि हवा वनजा च॥
 हादयथा गृहया दवा॥ वायवा कुरुजा रोमा॥ चवामादि (७) कथा॥
 खचया हच या सिद्धा॥ पा गाल गल वासिन॥ सर्वज्ञानदिवा मे च यो॥ य

प्राणि विरुप

मादामदिता ४ सदा ॥ विरुगिमापयचुक्त ॥ सर्वसिद्धिमनात्रवाशापनप्रमाः
चरुपी १० ॥ क्रुगुसायवावस्तिता ४ ॥ नानाप्रपधवागामा सुसिद्धसिद्धिदा
नदी ४ ॥ नामादृष्टनमस्वामि ॥ यथकाववावस्तिता ॥ ॥ वडाकाका ३ ॥ २७
दद्युष्ट ॥ दद्युष्टमकप्रधरुशा अठितकाष्टवसुसमरु ४ ॥ रवादकप्रतिहिलाल
न ४ ॥ प्ररुद्रावमप्ररुष्टका लक (धु) महावप्र ४ ॥ वधुलामघनादष्ट ४ ॥

यत्क कर्क कपालिनी ४ ॥ वैकाला अधका ३ ४ ॥ वाधवाधिपगिस्थथा अननो ४
ल्लेवकुमा रुस्यक्रा प्रुडव्यसमप्र ४ ॥ ठारसिर्णिलिकानासा अनिलाघनव
जीग ४ ॥ रुज (र्ण) रानदी फष्टु ह द्वाष्टी कस्थथा ४ ॥ ठारसिस्त्रिका नाः
सा अनिलाघनवर्जिग ४ ॥ रुज (र्ण) रानदी फष्टु ह द्वाष्टी कस्थथा ४ ॥
कालव (धु) हयणी वानकुमामहावल ४ ॥ पम्पारुष्टसूपा ४ ॥ कयालाविरु

आदि विज्ञान

यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥
 करुमा लामहावल४॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥
 गालजैय४॥ केला४॥ पिछि गानन४॥ मलामयमहाकु४॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ २०
 कूटी४॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥
 मनिह४॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ यययुशासुखीव४ सयरी लोहकवधारोलवसुथा॥ ॥

शीमनादादहामह्य॥ वात्रक (ह्रस्व) विदात्रक॥ उक्तामस्वोद्यनवे (ध्रुव) ॥ च४
 ह्य॥ कर्क कपर्दिन॥ महाच (ह्रस्व) निद्रमस्वो॥ महाक (ह्रस्व) त्रगाध॥ च४
 वातोचवहवा नानाचूधवाह्यय॥ नानापी० वातोयतुपतिपी० वा४
 हिगा॥ कुरुकुरुगानकपालेह्य पुतिद्रुगवातामुय॥ सन्दादे४ पुतिसेदा
 दे॥ दायेनानावि (ध्रुव) थ॥ अमस्वोद्यनवे (ध्रुव) ॥ च४

शिविकेन्द्र उद्घोषवनापवनमवलेशे ॥ सवित्राय नमः ॥ मन्त्रावली
 यथाकामे ॥ नीलनील उद्घोषे ॥ उक्ता नारायणाय नमः ॥ कण्ठलमालार ॥ ३४
 धाम्निनयविभक्तानना ॥ रुद्रामकटसैकी ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ पिपी ॥
 रुद्रपिपीके ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ मन्त्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥
 रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥

घृष्टमन्त्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥
 रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥
 रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥
 रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥
 रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥ रुद्रकटारुद्रावली ॥

पूतना ४ सुता ४॥ जममादि बुलिका ४॥ कावनक पाणिनासिका ४॥ दहा दय ४
 नातायासु ॥ जम ॥ पथ दय ठा तासु या ॥ पथ सु नसमाय क ॥ नाना ठाति सम
 निता ॥ निर्य ठा व लया का ४॥ अशपकि व वरि ता ४॥ हर ठा दय दया का २२
 नठा ला वरु न दे लया ॥ मानमधु क विरु पा न कु कर्म ठाति सु था ॥ पथ क उ व ४
 आव ल्या ॥ तथा जममरु को के टा ॥ कण ट ठाति विमु ता ॥ से कि धू ए व जा सु ४

टा ४॥ ठाति क सी ए व रु न ॥ अ सु कान व स न ४॥ यवाना दहा दा सु ४॥
 ददनु विरु य मा म ॥ य सि द्वा ष दि धा क वि ता ॥ य व ता ला व ता ४॥ अ वा
 र्थ सा ध का ४॥ ए व ॥ पू का ४॥ सम या सु था ॥ अ वा धि का म दा वी र्था ४॥ सु था ४
 वा वा धि का सु य ४॥ गाल का ४॥ सु का ४॥ ए व ॥ या ठा पी ० म दा म ला ४॥ य सि दि
 सा व ला ४॥ ए व ॥ के वा ग क ल स रु दा ४॥ वि ध स रु म द ला खा ॥ अ य य ठा ग ठा

धनाशांछां धननिर्मुक्तिं वृत्तं धनं दत्तवर्तिनः ॥ परं साधनं विवर्तकं
 कपयन् साधकं कथं ॥ विद्याधरं कवर्तिनं वृत्तं दत्तं दया दत्तं ॥ सर्वगः
 दध्मन् साधकं नाम कथं ॥ आयुः प्राप्तिं धर्मं धर्मं पुण्यं कुटिलं नदिनं ॥ ४०
 कलामधुलं कटिं वीर्यं यत्नं विधानं ॥ पातं यत्नं यत्नं मत्तिमीमं मत्तिमीमं
 कवर्तयन् ॥ निर्विकल्पं यत्नं दत्तं ॥ नामं वृत्तं लक्षणं दत्तं ॥ सर्वगं अविष्टः

कलुः ॥ पापं यत्नं धर्मं दत्तं ॥ यत्नं कथं दत्तं ॥ सामान्यं दत्तं धर्मं दत्तं ॥
 जायते प० मानं यत्नं धर्मं दत्तं ॥ मधुलं कवर्तयन् ॥ धर्मं दत्तं धर्मं दत्तं
 मत्तिमीमं ॥ दत्तं धर्मं धर्मं दत्तं ॥ समं धर्मं दत्तं ॥ विवर्तिवर्त
 नं दत्तं ॥ इष्टं धर्मं दत्तं ॥ दत्तं धर्मं दत्तं ॥ दत्तं धर्मं दत्तं ॥ दत्तं धर्मं दत्तं
 विष्टं धर्मं दत्तं ॥ दत्तं धर्मं दत्तं ॥ दत्तं धर्मं दत्तं ॥ दत्तं धर्मं दत्तं ॥

